अंजलि और जादुई रात

Ayush1 Kumar1

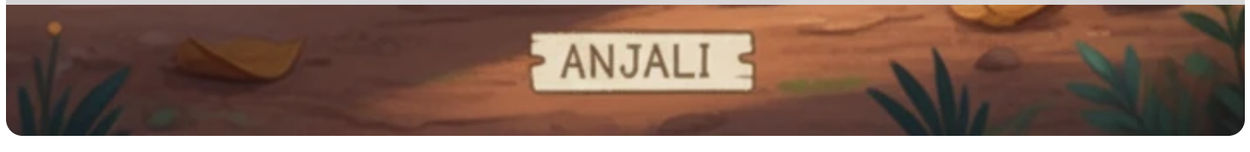

गांव में गहरी रात हो चुकी है और आसमान अनगिनत चमकते सितारों से भरा हुआ है। चारों तरफ सन्नाटा है और हल्की ठंडी हवा पेड़ के पत्तों को धीरे से सहला रही है।

गांव के घरों की छतों पर बच्चे गहरी नींद में सो रहे हैं। उनके चे

पर चांदनी की सफेद रोशनी पड़ रही है और वे मीठे सपनों की दुनिया खोए हुए हैं।

लेकिन छोटी अंजलि की आंखों में नींद नहीं है। वह अपनी नीली फ्रॉक पहने घर के बाहर खड़ी है और रात के इस सुंदर सन्नाटे को देर रही है।

अंजलि धीरे-धीरे सड़क पर चलने लगती है और उसके छोटे कद
मिट्टी पर हल्की आवाज कर रहे हैं। उसे महसूस होता है कि रात में ग
का हर कोना कुछ अलग और थोड़ा रहस्यमयी लग रहा है।

अचानक उसे झाड़ियों के पीछे से एक सुनहरी रोशनी टिमटिमार्त हुई दिखाई देती है। वह उत्सुकता से उस रोशनी की ओर बढ़ती है, य सोचकर कि क्या यह कोई जादुई जुगनू है।

गांव का पुराना बरगद का पेड़ चांदनी में किसी विशाल रक्षक की तरह खड़ा है। अंजलि उसके पास रुकती है और हवा में गूंजती एक धीमी और मधुर फुसफुसाहट सुनती है।

सड़क के किनारे खिले रात की रानी के फूलों की खुशबू पूरी हव
में घुल गई है। अंजलि को लगता है जैसे ये फूल रात के अंधेरे में मुस्कु
रहे हैं और उसे अपनी ओर बुला रहे हैं।

वह एक पत्थर पर बैठ जाती है और ऊपर देखते हुए सितारों कं गिनने की कोशिश करती है। उसे ऐसा लगता है जैसे चांद उसे देख रह और उसके साथ लुका-छिपी खेल रहा है।

अब हवा और भी ठंडी हो गई है और अंजलि को धीरे-धीरे नींद आने लगी है। वह अपनी जादुई सैर खत्म करके दबे पांव वापस अपने की ओर चल देती है।

अंजलि अपनी चटाई पर लेट जाती है और खिड़की से दिखते सितारों को देखते हुए सो जाती है। सुबह होने तक वह इसी सुंदर औ रहस्यमयी रात के सपनों में डूबी रहेगी।